

पद १४५

(राग: पिलु - ताल: त्रिवट)

यहि दो बालक बनको सिधारे हैं ॥ध्रु.॥ कैसे वाके माता कैसे
वाके पिता । कैसे नगरीके लोक कठिन हिय्या रहे ॥१॥ मानिक
के प्रभु अयोध्यावासी । चरण लगत जाके सील उद्धारे है ॥२॥